कक्षाओं में अलगाव को रोकना

नवीन कुमार पासवान

कक्षा-1 से स्नातक तक 16 साल की शिक्षा के दौरान, मैं अपनी कक्षा में बमुश्किल लड़कियों से बात करता था। कुछ लड़के हालाँकि लड़कियों से बेझिझक बात करते थे, लेकिन मुझे लड़कियों के साथ बातचीत करने में मानसिक तौर पर बाधाएँ आती थीं। मैं अपनी कक्षा में लड़कियों से बात नहीं करने वाले एक समूह का अगुआ भी था। इतने सालों के बाद, अब मैं सोचता हूँ कि मुझे लड़कियों से बात करने से क्या चीज़ रोकती थी। मैंने अपने दोस्तों को ऐसा करने से क्यों रोका था? क्या इसका मेरे माता-पिता या मेरे शिक्षकों से कोई लेना-देना था? क्या मुझ पर फ़िल्मों का प्रभाव था? मैं ऐसे कुछ अनुभव इस लेख में साझा कर रहा हूँ, जिन्होंने मुझे एक विद्यार्थी के रूप में प्रभावित किया और जो आज भी अन्य बच्चों को प्रभावित कर रहे होंगे। लेख सामान्य रूप से कक्षा पर और विशेष रूप से विद्यार्थियों की समग्र शिक्षा पर लैंगिक अलगाव के प्रभाव पर भी प्रकाश डालता है। अन्त में, लेख में कक्षा के भीतर इन अलगावों को पाटने के तरीक़े भी सुझाए गए हैं।

स्कूल हमें परिवार के बाद पहला सामाजिक रूप से घुलने-मिलने का स्थान उपलब्ध कराता है। मेरे स्कूल में लड़के और लड़कियों के अलग-अलग बैठने की व्यवस्था थी। मैं अपने समूह के बाहर लड़कियों या लड़कों से भी बात नहीं करता था। मैं लड़कियों को लड़कों की तुलना में बौद्धिक रूप से हीन मानता था और उनके लिए कोई सम्मान महसूस नहीं करता था, हालाँकि मैं अपनी बहन और अपनी कुछ महिला शिक्षकों को इसके अपवाद के रूप में देखता था। अकेले लड़कों के समूह का हिस्सा होने के नाते, मेरा अनुभव सीमित रहा और इसलिए, मेरा सीखना भी। इस अलगाव के चलते ख़ुद के बारे में मेरा ऐसा नज़रिया बना और मैंने ऐसे चुनाव किए, जिन्होंने स्नातक डिग्री पूरी होने तक मेरे व्यवहार को प्रभावित किया।

एक झूठी आत्म-छवि

मैंने एक आदर्श व्यक्ति होने की आत्म-छवि विकसित कर ली थी। इस आत्म-छवि को बनाए रखने की इच्छा मेरे सभी कार्यों को नियंत्रित करती थी। मेरे लिए सिद्धान्तों वाला व्यक्ति होना आदर्श होना था, ऐसा व्यक्ति जो किसी को अपने व्यवहार पर सवाल उठाने का मौक़ा नहीं देता था; एक लड़का जो लड़कियों से बात नहीं करता था। मैंने अपने दोस्तों के माता-पिता की आँखों में इस सम्भावित 'साफ़-सुथरी' छवि को सफलतापूर्वक बनाया था; वे मुझ पर भरोसा करते थे और अपने बच्चों को आसानी से वह सब कुछ करने देते थे जिसमें मैं शामिल रहता था। स्कूल प्रशासन का भी मुझ पर वैसा ही भरोसा था। वे किसी भी नए शिक्षक के बारे में सुझाव लेने या किसी शरारत में शामिल मेरे सहपाठियों के नाम जानने के लिए मुझसे बात करते थे। इस छवि को बनाए रखने के लिए, मैं उन्हें अपने दोस्तों के नाम भी दे दिया करता था, भले ही इसके कारण बाद में उनसे झगड़ा हो जाए। यह मेरे लिए बहुत कठिन स्थिति हुआ करती थी। मैंने इस आत्म-छवि को बनाए रखने के लिए ख़ुद को और अपने दोस्तों को लड़कियों के साथ बातचीत करने से रोक रखा था। अगर वे लड़कियों से बात करते तो मैं उनसे बात करना बन्द करके उन पर दबाव बनाता था। मैं इस छवि को बनाए रखने के लिए लड़कियों के साथ बेहद रूखा व्यवहार करने का दिखावा कर सकता था। एक समूह के रूप में, हम कक्षा में लड़कियों पर टिप्पणी करके उन पर धौंस जमाया करते थे। कक्षा के अन्दर अलगाव केवल लड़के और लड़कियों के बीच ही नहीं था। कक्षा लड़कों के दो अलग-अलग समूहों में भी विभाजित थी।

न तो स्कूल प्रशासन और न ही मेरे माता-पिता ने जानबूझकर मेरे इस तरह के रवैए को बढ़ावा दिया था। लेकिन इसके साथ यह भी एक सच्चाई है कि न तो परिवार और न ही शिक्षकों ने इस पर कभी ध्यान दिया। मैं 21 साल की उम्र में एक एनजीओ से जुड़ा और वहाँ जेंडर ट्रेनिंग ली। उस प्रशिक्षण ने मुझे अपने अन्दर मौजूद पूर्वाग्रहों से अवगत कराया। इसके बाद मुझे एहसास हुआ कि एक विद्यार्थी के रूप में, मेरी हरकतें हमेशा महिलाओं के ख़िलाफ़ रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों से ग्रसित थीं। मुझे एक घटना याद आ गई, जब 11 साल की उम्र में मैंने अपनी बड़ी बहन के जींस पहनने पर आपत्ति जताई थी। मुझे एहसास हुआ कि मैं इतने सालों से कितना असंवेदनशील था।

अलगाव को रोकना

कक्षा में बदलाव लाने में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। वे स्कूल के अन्दर अलगाव को ख़त्म करने के लिए क़दम उठा सकते हैं और कक्षा को सभी के लिए समग्र रूप से सीखने की जगह के रूप में विकसित कर सकते हैं। मैं सोचता हूँ कि मेरे स्कूल के शिक्षक मेरी कक्षा में अलगाव को कम करने के

लिए क्या कर सकते थे। निम्नलिखित कुछ कार्य हैं जो शिक्षक कक्षाओं में अलगाव को दूर करने के लिए कर सकते हैं।

भावनाओं के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करना

शिक्षक स्कूल में एक भावनात्मक वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं, जहाँ बच्चों को प्यार, नफ़रत, ईर्ष्या और भय जैसी भावनाओं के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी मदद की जाती है। इससे ऐसा माहौल बनेगा जहाँ बच्चे अपने डर और चिन्ता को साझा कर सकते हैं और उन्हें दूर करने में एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं।

मिश्रित समूहों का गठन

शिक्षक, विभिन्न विभाजित समूहों के बच्चों द्वारा बनाए गए छोटे उपसमूहों को सामूहिक कार्य सौंप सकते हैं। इससे विभिन्न विभाजित समूहों के बच्चे एक-दूसरे के साथ बातचीत कर सकेंगे।

सहयोगात्मक कार्यों को सौंपना

शिक्षक विद्यार्थियों के बीच बातचीत-मेलजोल को बढ़ाने के लिए उन्हें जानबूझकर ऐसे सहयोगात्मक कार्य सौंप सकते हैं जिन्हें करते हुए वे मिलकर काम करना सीखते हैं, सामान्य लक्ष्य निर्धारित करते हैं और अन्य विद्यार्थियों के साथ एकजुटता और उनके लिए सम्मान की भावना विकसित करते हैं। शिक्षक समूह बनाकर ऐसा कर सकते हैं ताकि दो विभाजित समूहों के विद्यार्थियों को एक साथ काम करते हुए, बातचीत करने और एक-दूसरे को समझने के लिए अधिक समय मिल सके।

साझा समझ का निर्माण

शिक्षक विद्यार्थियों को अपनी राय साझा करने, अलग-अलग राय सुनने और फिर एक साझा समझ बनाने के लिए प्रोत्साहित करके अपनी कक्षाओं में अलग-अलग सोच-विचार सुनने की संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं।

कक्षा में शक्ति सन्तुलन

शिक्षक कक्षा की समूह गतिशीलता को आसानी से समझ सकते हैं। वे इसका उपयोग हावी और दबाव में रहने वाले समूहों के बीच शक्ति को सन्तुलित करने के लिए कर सकते हैं। शिक्षक जानबूझकर, दबाव में रहने वाले समूह के बच्चों से उनकी राय पूछकर और उनके तर्कों का समर्थन करके उनकी भागीदारी को सुगम बना सकते हैं।

प्रसिद्ध मनोविश्लेषक, विल्फ्रेड बायोन, विद्यार्थियों के बीच विद्यार्थी एकजुटता बनाने के लिए कक्षा में निम्नलिखित कार्य करने का सुझाव देते हैं :

साझा लक्ष्य निर्धारित करना

एक साझा लक्ष्य निर्धारित करना जिसके लिए पूरी कक्षा सहयोगात्मक रूप से काम करे। यह बच्चों को कक्षा के सामूहिक लक्ष्यों की पहचान करने और उनके लिए काम करने में मदद करेगा।

ख़ुद को दूसरों से भिन्न करना

शिक्षक विद्यार्थियों के बीच एक समझ और स्वीकृति का निर्माण कर सकता है कि व्यक्ति अपने सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अनुभवों के आधार पर भिन्न होते हैं। इससे स्वयं और दूसरे की बेहतर समझ बनाने में मदद मिलेगी। इससे अलग राय रखने वाले लोगों के प्रति सम्मान विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

दूसरों के साथ सहज होना

अलग-अलग दृष्टिकोण वाले लोगों को स्वीकार करना एक कठिन काम है क्योंकि इसके लिए किसी मुद्दे पर अपनी राय पर सवाल उठाने के कौशल की आवश्यकता होती है। शिक्षक विद्यार्थियों को एक-दूसरे के विचारों के साथ सहज होने में मदद करके इस प्रक्रिया को सुगम बना सकते हैं। फिर बच्चों को कक्षा के प्रत्येक सदस्य के योगदान के मूल्य से अवगत कराया जाना चाहिए।

विरोध का सामना

शिक्षक विद्यार्थियों को अन्य सदस्यों से असहमति का सामना करने की क्षमता विकसित करने में मदद कर सकता है। विद्यार्थी व्यक्ति पर नहीं, विचारों पर आपत्ति करना सीखेंगे। यह क्षमता उन्हें एक मुद्दे पर कई दृष्टिकोणों से सोचने के लिए तैयार करेगी।

प्रतिक्रिया की प्रक्रिया को सुगम बनाना

क्रेग स्टीवंस, स्कूल के एक मनोवैज्ञानिक, प्रतिक्रिया की अवधारणा की सिफारिश करते हैं। बच्चों को इस प्रक्रिया में रचनात्मक विचारों, भावनाओं और आलोचनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। प्रत्येक बच्चे को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया जाता है, लेकिन ऐसा करने से मना करने के अधिकार के साथ। यह बच्चों को टकराव रहित तरीक़े से प्रश्न पूछने में मदद करता है। नतीजतन, बच्चे मौखिक रूप से मुखर बनते हैं, अपने शब्दों और कार्यों के लिए अधिक ज़िम्मेदारी महसूस करते हैं और दूसरों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

अलग जेंडर और विचारधारा वाले सहपाठियों के साथ बातचीत करने से प्रत्येक बच्चे को चीज़ों को एक ही दृष्टिकोण से देखने की बजाय उनकी एक व्यापक तस्वीर हासिल करने में मदद मिलेगी। विद्यार्थी मतभेदों और विचारों व प्राथमिकताओं

की विविधता का महत्त्व जानेंगे। स्कूल में मिलकर काम करने की संस्कृति को बढ़ावा देने से स्कूल सर्वांगीण शिक्षा और विकास के एक ऐसे स्थान के रूप में विकसित होगा जहाँ विद्यार्थी एक-दूसरे से सीखते हैं और सामूहिक रूप से बेहतर विकल्पों पर पहुँचते हैं। यह तभी सम्भव होगा जब विद्यार्थी कुछ ख़ास मूल्यों के प्रति जागरूक हों और कक्षाओं में उनका पालन करना शुरू करें, जिसमें दूसरे विद्यार्थियों, दोस्तियों का सम्मान करना और स्वयं व समूह के बड़े लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित करना शामिल है।

नवीन कुमार पासवान अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में स्कूल ऑफ़ एजुकेशन में रिसर्च एसोसिएट हैं और संवाद, बन्धुत्व और न्याय के लिए बने एक हित समूह का हिस्सा हैं। इससे पहले, उन्होंने ग़ैर-सरकारी संगठन, प्रदान के साथ डेवलपमेंट प्रैक्टिशनर के रूप में काम किया था। उनके पास अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से शिक्षा में स्नातकोत्तर डिग्री है और पहचान व समूह निर्माण उनके शोध की रुचि के क्षेत्र हैं। उनसे *naveenkumar.paswan@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सोनू यादव **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय